किरातार्जुनीयम् में निरूपित राजनीतिक व्यवस्था एवं उसकी उपादेयता

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

किरातार्जुनीयम् में निरूपित राजनीतिक व्यवस्था एवं उसकी उपादेयता

डॉ0 सलिलकुमार पाण्डेय
उपाध्यक्ष
कौण्डिन्य साहित्य सेवा समिति (पंजीकृत) गोरखपुर (उ0 प्र0)

नमूना • SAMPLE

AKHAND
अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस
दिल्ली (भारत)

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस

एल–9ए, प्रथम तल, गली न. 42,
सादतपुर एक्सटेंसन, दिल्ली–110094 (भारत)
फोन न. : 9968628081, 9555149955, 9013387535
E-mail : akhandpublishing@yahoo.com
akhandpublishinghouse@gmail.com
Website : www.akhandbooks.com

किरातार्जुनीयम् में निरूपित राजनीतिक व्यवस्था एवं उसकी उपादेयता

प्रथम संस्करण : 2019
© लेखक
ISBN: 978-93-88998-30-7

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी हिस्से को प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इलेक्ट्रॉनिक या किसी अन्य माध्यम द्वारा पुनः प्राप्ति समेत किसी भी रूप में प्रतिलिपिकृत, अनुवादित, संगृहीत नहीं किया जा सकता है और न ही किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम द्वारा इसे प्रसारित किया जा सकता है।

इस पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं जिसका प्रकाशक से कोई संबंध नहीं है।

भारत में प्रकाशित

झपसू यादव 'अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस' के द्वारा प्रकाशित।

SAMPLE COPY

समर्पण

ममतामयी विदुषी माता जी श्रीमती राजकुमारी पाण्डेय
(एम. ए., संस्कृत)
एवं
प्रातः स्मरणीय पिताजी डॉ. सुशीलकुमार पाण्डेय ''साहित्येन्दु'' पूर्व एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष (स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग) सन्त तुलसीदास स्नातकोत्तर महाविद्यालय कादीपुर जिला सुल्तानपुर (उ0 प्र0)
को सश्रद्ध

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

प्राक्कथन

प्राचीन भारत 'सोने की चिड़िया' तथा विश्वगुरू के रूप में सुप्रतिष्ठ था। यह सुप्रतिष्ठा अकारण नहीं थी। यद्यपि प्राचीन भारत में राजतन्त्र था तथापि उसमें लोकतंत्र के तत्व सन्निहित थे। प्राचीन भारत की राजनीति का मूल उद्देश्य था 'सर्वेभवन्तु सुखिनः' अर्थात् सभी सुखी हों। इसकी पृष्ठभूमि कल्याणकारी–राज्य की अवधारणा पुष्ट करती है। संस्कृत साहित्य में तीन महाकाव्यों को बृहत्त्रयी की संज्ञा दी गयी हैं ये महाकाव्य हैं, भारवि रचित किरातार्जुनीय, माघ रचित शिशुपालवध तथा श्रीहर्षरचित नैषधीयचरित।

किरातार्जुनीय महाकाव्य में राजनीतिक तत्वों का प्राचुर्य है। इसके अध्ययन से हमें जिस तन्त्र का ज्ञान होता है वह राजतन्त्र है परन्तु उसमें लोकतंत्र समाहित था। लोकतन्त्र का यही अभिप्राय होना चाहिए कि जिस शासन में प्रजा की भावनाओं को आधार मानकर शासन संचालित किया जाये वही आदर्श लोकतंत्र है न कि प्रजा द्वारा शासक की चुनाव पद्धति से। चाहे किसी भी पद्धति से शासक का चुनाव हो परन्तु उसमें शासकीय योग्यता का अभाव नहीं होना चाहिए। नृपतन्त्र में यदि प्रजा अपनी भावनाओं एवं अभिलाषाओं को राजा के समक्ष निर्भय होकर कह सके और राजा भी प्रजा का आदर करे तो वह लोकतंत्र ही होता है क्योंकि राजा, प्रजा के लिए होता है। वह निरंकुश नहीं होता उस पर प्रजा का अंकुश रहता है इन्हीं सब बातों का परिचय किरातार्जुनीय में मिलता है। इस काव्य के मूल में राजा का प्रमुख स्थान है फिर भी राजा के जिन गुणों एवं कर्तव्यों की ओर इस महाकाव्य में संकेत किया गया है उससे यही सिद्ध होता है कि राजतन्त्र होते हुए भी प्रजातान्त्रिक तत्वों को मान्यता दी जाती थी क्योंकि राजागण प्रजापालन को ही प्रमुख कर्तव्य मानते थे।

किरातार्जुनीय की मान्यता है कि राजा का कर्तव्य प्रजा का रक्षण करना है। यदि राजा अपनी प्रजा का अनुरंजन न कर सके तो उसे स्वयं को राजा

SAMPLE

कहलाने का कोई अधिकार नहीं है। राजा अपनी प्रजा की सभी आपत्तियों से सर्वतोभावेन रक्षा करता है तथा अन्नादि के द्वारा उसका पोषण करने से वह पिता के समान होता है। भारवि के अनुसार ये सभी सुविधाएँ प्रजा को राजा द्वारा ही उपलब्ध होनी चाहिए और किरातार्जुनीय से यह स्पष्ट होता है कि प्रजा को सभी सुख सुविधाएँ प्राप्त थीं और राजा प्रजा का पिता के समान पोषण करते थे। किरातार्जुनीय की उक्त मान्यताएँ आज भी समसामयिक एवं उपयोगी हैं।

मैंने वन्दनीया डॉ. वन्दना जायसवाल एसोसिएट प्रोफेसर राजनीति विज्ञान विभाग का0 सु0 स्नातकोत्तर महाविद्यालय अयोध्या फैजाबाद तथा राजनीति विज्ञान के विलक्षण आचार्य डॉ. रामकृष्ण जायसवाल सेवानिवृत्त विभागाध्यक्ष का0 सु0 स्नातकोत्तर महाविद्यालय अयोध्या फैजाबाद से राजनीति विज्ञान के सिद्धान्तों तथा सूत्रों को प्राप्त किया है अतः आप दोनों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

मैं वन्दनीया माता श्रीमती राजकुमारी पाण्डेय एवं पिता डॉ0 सुशीलकुमार पाण्डेय 'साहित्येन्दु' पूर्व अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, सन्त तुलसीदास स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कादीपुर, सुलतानपुर के प्रति मनसा, वाचा कर्मणा आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने मुझे शिक्षा विषयक संस्कार दिये। अनुज डॉ0 समीर कुमार पाण्डेय, असिस्टेन्ट प्रोफेसर दूरस्थ शिक्षा निदेशालय महात्मा गाँधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय वर्धा, महाराष्ट्र ने ग्रन्थों के संग्रह में मेरी प्रभूत सहायता की है। अतएव वह धन्यवाद के सत्पात्र हैं। पत्नी श्रीमती सरिता पाण्डेय ने मुझे पारिवारिक दायित्त्वों से मुक्त कर मेरे अध्ययन कार्य में सहायता की है अतएव उनके प्रति साधुवाद ज्ञापित करता हूँ। पुत्र सुजलकुमार पाण्डेय तथा पुत्री कु0 समृद्धि पाण्डेय के सहयोग को मैं विस्मृत नहीं कर सकता, मैं उनके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामना करता हूँ।

श्री गंगा दशहरा
22–06–2018

सलिलकुमार पाण्डेय
पता– ग्राम भिलोरा पत्रालय नौसड़
जनपद गोरखपुर
उत्तर प्रदेश –273016

विषय–सूची

	प्राक्कथन	*vii*
1.	प्राचीन भारतीय राज्य–व्यवस्था की विशेषताएँ	1
2.	संस्कृत साहित्य की बृहत्त्रयी का आशय एवं महत्व	58
3.	किरातार्जुनीयम् में निरूपित राज–व्यवस्था	99
4.	किरातार्जुनीयम, शिशुपालवधम् तथा नैषधीयचरितम् में वर्णित राजतन्त्र की तुलना	126
5.	किरातार्जुनीयम् की राजनीतिक व्यवस्था की उपादेयता तथा प्रासंगिकता	168
6.	निष्कर्ष एवं उपसंहार	186
	सन्दर्भ ग्रन्थ सूची	*198*

नमूना • SAMPLE